अगृहीत मिथ्याज्ञान

www.JainKosh.org

याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान,सो दुखदायक अज्ञान जान॥७॥

- याही= इस
- प्रतीतिजुत= मिथ्या मान्यता सहित
- कछुक ज्ञान= जो कुछ ज्ञान है
- सो= वह
- दुखदायक= कष्ट देनेवाला
- अज्ञान=अगृहीत मिथ्याज्ञान है
- जान= समझना चाहिये

fppt.com

याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान,सो दुखदायक अज्ञान जान॥७॥

- अगृहीत मिथ्याज्ञान :

अगृहीत मिथ्यादर्शन के रहते हुए जो कुछ ज्ञान हो, उसे अगृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं; वह बहुत दुःखदाता है ।

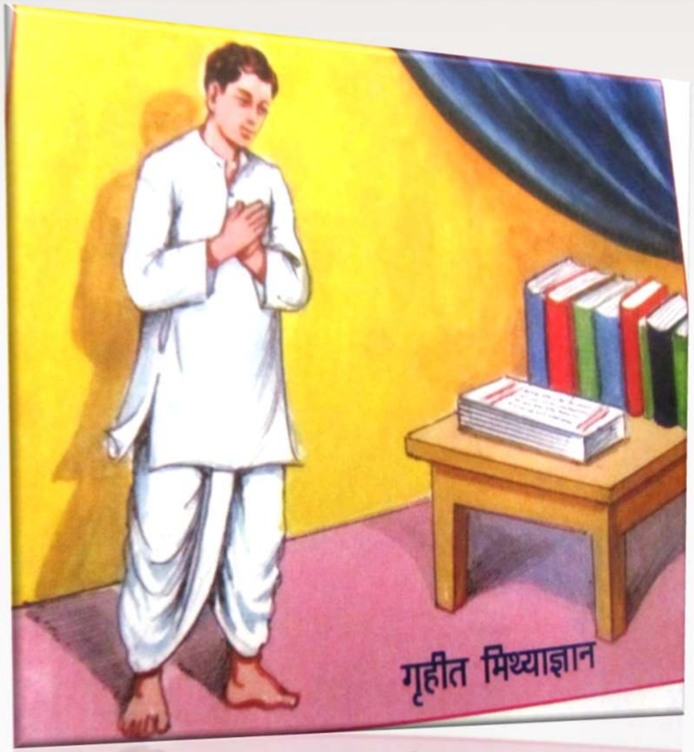

fppt.com

अगृहीत मिथ्याज्ञान

अनादिकालीन है
इसलिये अगृहीत

अगृहीत मिथ्यादर्शन के साथ जो ज्ञान इसलिये अगृहीत मिथ्याज्ञान

fppt.com

अर्थात्

सात तत्त्वों के
संबंध में जो
विपरीत ज्ञान

अगृहीत मिथ्याचारित्र

www.JainKosh.org

इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानो मिथ्याचरित्त ।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत, सुनिये सु तेह॥८॥

- विषयनि में= पाँच इन्द्रियों के विषयों में
- इन जुत= अगृहीत मिथ्यादर्शन तथा अगृहीत मिथ्याज्ञान सहित
- प्रवृत्त= प्रवृत्ति करता है
- ताको= उसे
- मिथ्याचरित्त= अगृहीत मिथ्याचारित्र
- जानो= समझो ।
- यों= इसप्रकार
- निसर्ग= अगृहीत
- मिथ्यात्वादि= मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र
- तेह= उसे

fppt.com

इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानो मिथ्याचरित्त ।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत, सुनिये सु तेह॥८॥

- अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान सहित पाँच इन्द्रियों के विषय में प्रवृत्ति करना उसे अगृहीत मिथ्याचारित्र कहा जाता है।
- इन तीनों को दुःख का कारण जानकर तत्त्वज्ञान द्वारा उनका त्याग करना चाहिए ।
- अब, जो गृहीत मिथ्यात्वादि हैं उनका वर्णन सुनो ।

fppt.com

अगृहीत मिथ्याचारित्र

fppt.com

अर्थात्

5 इन्द्रिय के विषयों में राग, आसक्ति से लीनता अगृहीत मिथ्याचारित्र है

fppt.com

विशेष

मिथ्यात्व सहित होने पर बाह्य में ५ इन्द्रिय विषय त्याग होने पर भी वह त्याग

↓

मिथ्याचारित्र ही नाम पाता है

fppt.com

उदा. में मिथ्या दर्शन, ज्ञान, चारित्र

मिठाई में सुख है – ऐसा मानना	• अगृहीत मिथ्या दर्शन
मिठाई में सुख है – ऐसा ज्ञान (जानना)	• अगृहीत मिथ्याज्ञान
मिठाई खाते हुए सुख का अनुभव करना	• अगृहीत मिथ्याचारित्र

fppt.com

गृहीत मिथ्यादर्शन

यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह॥८॥
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर दर्शनमोह एव ।

- कुगुरु= मिथ्या गुरु की
- कुदेव= मिथ्यादेव की
- कुधर्म= मिथ्या धर्म की
- सेव= सेवा करता है,
- पोषैं= पोषता
- चिर= अति दीर्घकाल तक
- दर्शनमोह= मिथ्यादर्शन
- एव= ही

fppt.com

जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर दर्शनमोह एव ।

कुगुरु, कुदेव और कुधर्म का सेवन से

दीर्घकाल तक मिथ्यादर्शन का ही पोषण होता है और

यही गृहीत मिथ्यादर्शन कहलाता है ।

fppt.com

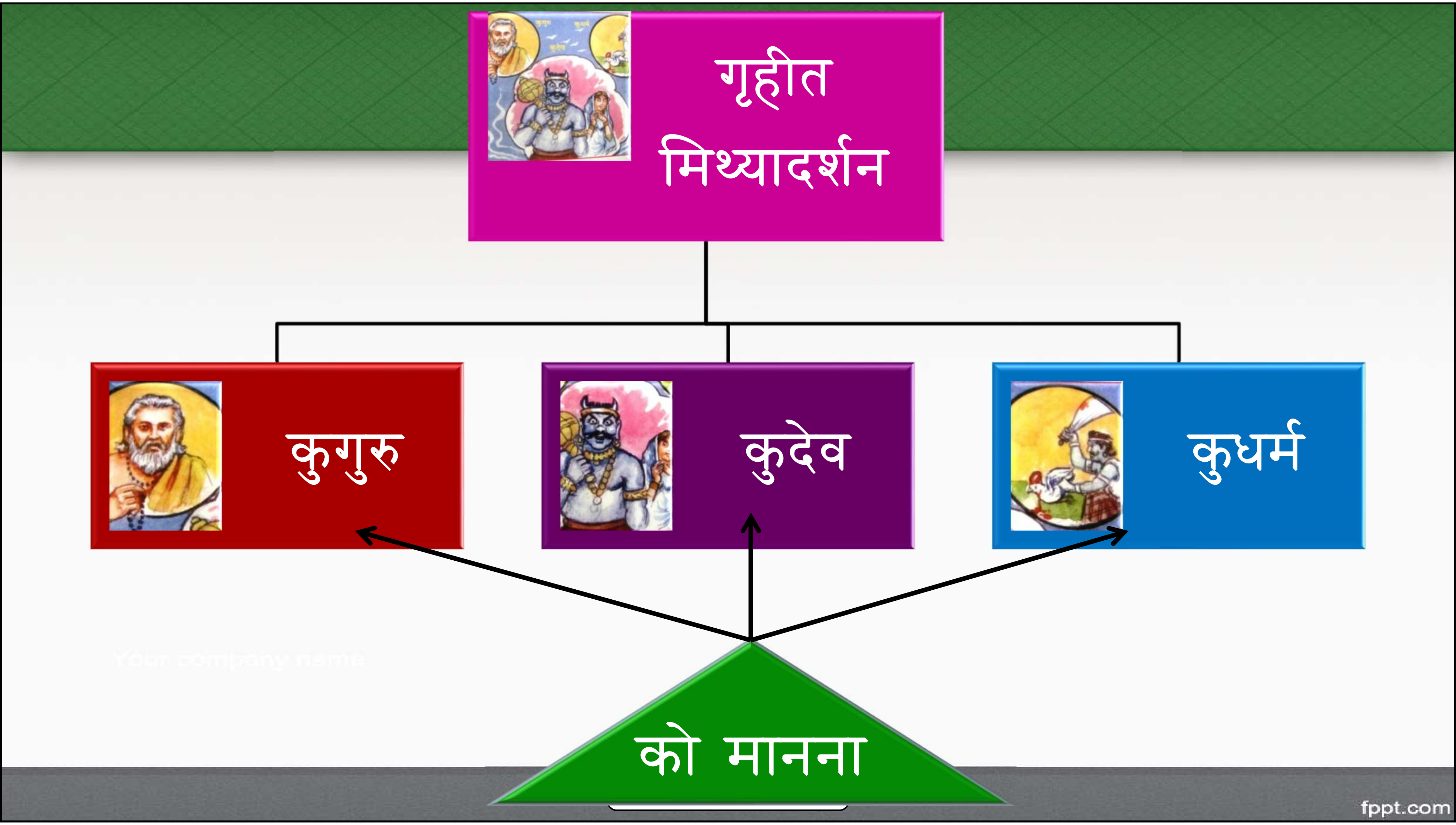
गृहीत मिथ्यादर्शन
कुगुरु
कुदेव
कुधर्म
को मानना
fppt.com

गृहीत मिथ्यादर्शन कैसे?

गृहीत: इस भव में कुगुरु, कुदेव, कुधर्म को मानने की नई मान्यता ग्रहण की

मिथ्यादर्शन: जो कि हमारी अनादिकालीन मिथ्या मान्यताओं की ही पुष्टी करने वाली है

fppt.com

मिथ्यादर्शन

अगृहीत

अनादि से प्रयोजनभूत ७ तत्त्वों का विपरीत श्रद्धान

गृहीत

कुगुरु, कुदेव और कुधर्म को सत्य मानना

fppt.com

कुगुरु के लक्षण

www.JainKosh.org

अंतर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन अम्बरतैं सनेह ॥९॥
धारैं कुलिंग लहि महत भाव,ते कुगुरु जन्मजल उपलनाव;

- रागादिक= मिथ्यात्व-राग-द्वेष आदि
- धरैं= धारण करता है और
- अम्बरतैं= धन तथा वस्त्रादि से
- स्नेह= प्रेम रखता है तथा
- महत भाव= महात्मापने का भाव
- कुलिंग= मिथ्यावेषों को
- लहि= ग्रहण करके
- कुगुरु जन्मजल= संसाररूपी समुद्र में
- उपलनाव= पत्थर की नौका समान है

fppt.com

अंतर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन अम्बरतैं सनेह ॥९॥
धारैं कुलिंग लहि महत भाव,ते कुगुरु जन्मजल उपलनाव;

जो मिथ्यात्वादि अंतरंग परिग्रह सहित हैं

बाह्य में धनादि-रूप बहिरंग परिग्रह सहित हैं

जिनमार्ग के तीन लिंगों के अतिरिक्त अन्य लिंगों को धारण करते हैं

उस कुलिंग से अपने को महंत मानते हैं, वे कुगुरु कहलाते हैं

जो कि पत्थर की नाव के समान होते हैं

fppt.com

कुगुरु का लक्षण

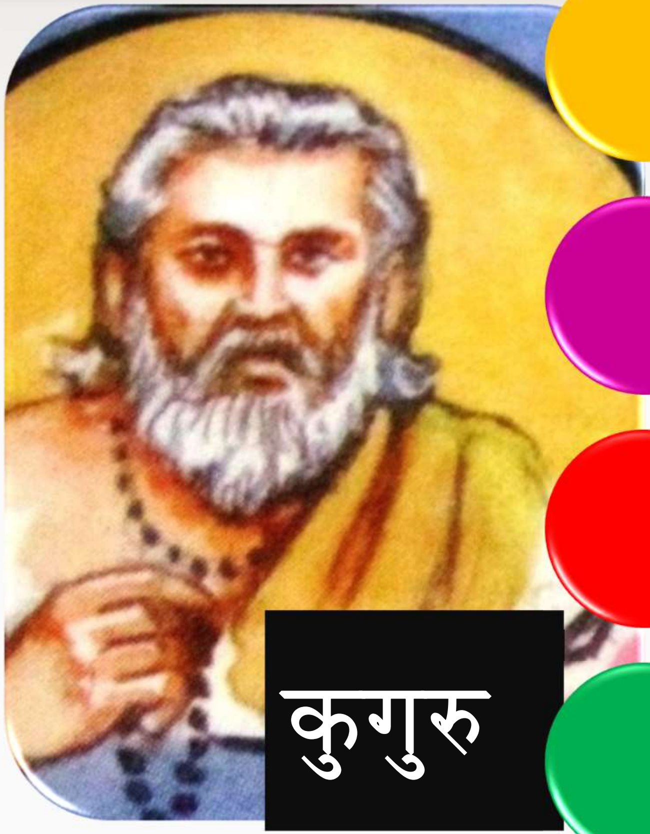

- जो कुलिंग के धारक हैं,
- मिथ्यात्वादि अंतरंग परिग्रह
- तथा वस्त्रादि बहिरंग परिग्रह सहित हैं,
- अपने को महंत मानते हैं, मनाते हैं

परिग्रह

परि= चारों ओर से
ग्रह= ग्रहण करना

पर में मूर्च्छा, ममत्व
का परिणाम

www.JainKosh.org
fppt.com

परिग्रह

अंतरंग(14)

बहिरंग(10)

fppt.com

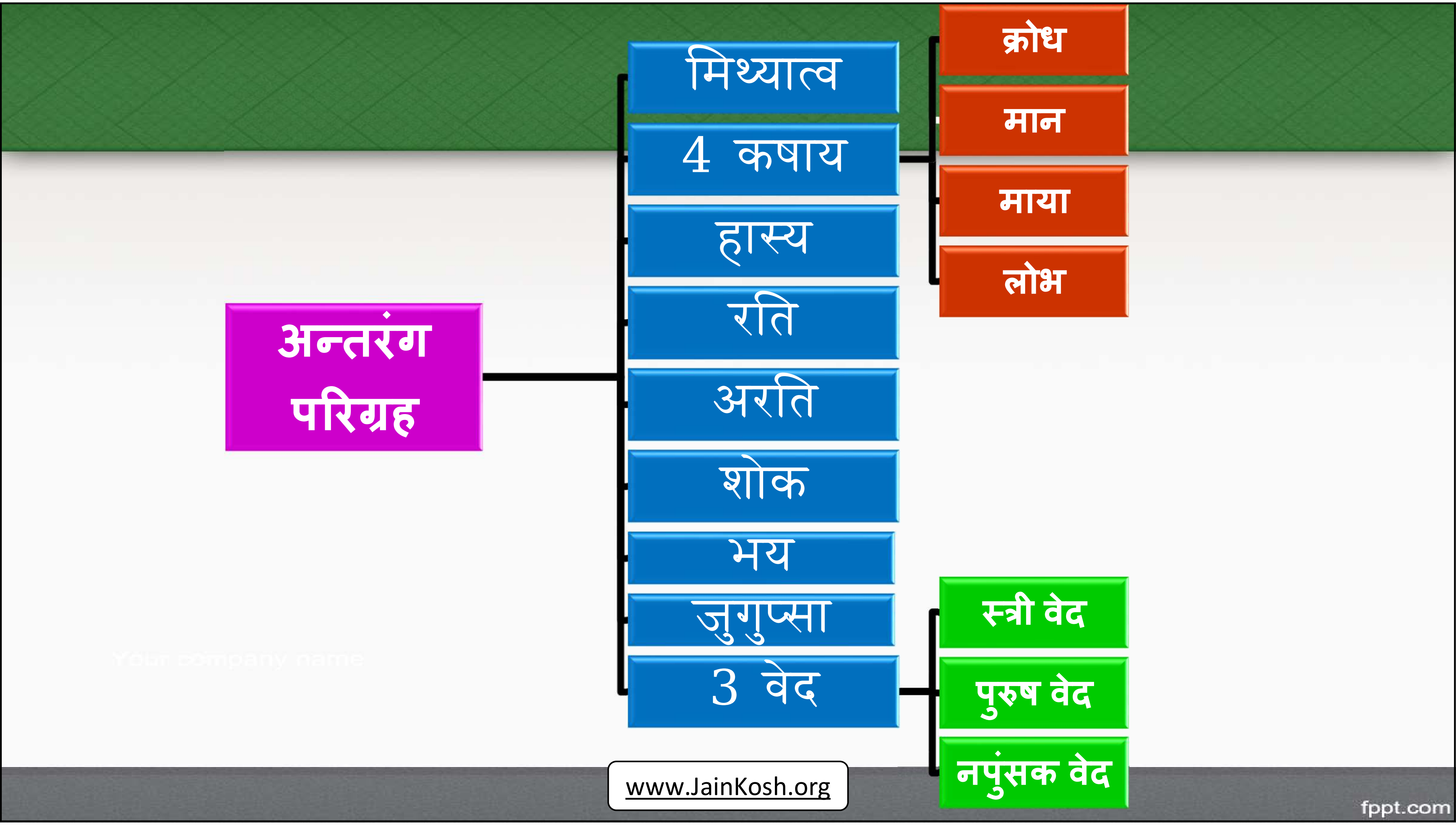

अन्तरंग परिग्रह
मिथ्यात्व
4 कषाय
हास्य
रति
अरति
शोक
भय
जुगुप्सा
3 वेद
क्रोध
मान
माया
लोभ
स्त्री वेद
पुरुष वेद
नपुंसक वेद
www.JainKosh.org
fppt.com

बहिरंग परिग्रह (10)

क्षेत्र-मकान

सोना-चांदी

दास-दासी

धन (पशुधन)-धान्य

वस्त्र-बर्तन

fppt.com

सुलिंग-कुलिंग

जिनमार्ग में तीन सम्यग्दर्शनस्वरूप लिंग हैं:

जिनस्वरूप-निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिलिंग,

आर्यिकारूप यह स्त्रियों का लिंग,

उत्कृष्ट प्रतिमाधारी श्रावकलिंग

इन तीन के अतिरिक्त जितने भी लिंग हैं वे कुलिंग हैं

fppt.com

कुगुरु कैसे हैं?

पत्थर की
नाव के
समान

Your company name

fppt.com

कुगुरु को मानने से क्या होगा?

कुगुरु की श्रद्धा,

भक्ति,

पूजा,

विनय

अनुमोदना

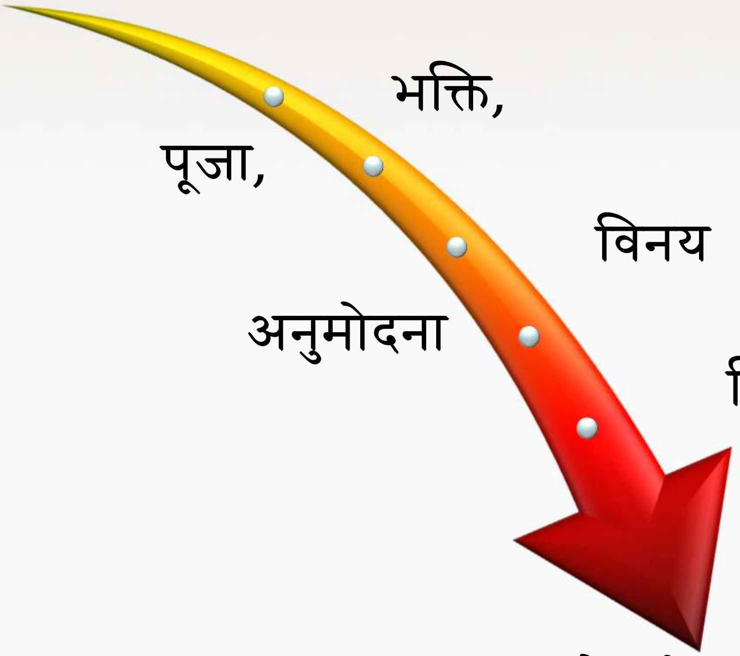

करने से गृहीत मिथ्यात्व का सेवन होता है और

उससे जीव अनंतकाल तक भव-भ्रमण करता है

www.JainKosh.org

fppt.com

कोई कुगुरु मिल जाय तो क्या करना?

यदि हमें कोई रोग है और ये पता है कि अमुक डॉ. फर्जी है, गलत दवाई देता है, तो क्या करेगें?

पहचान वाला डॉ है तो क्या शर्म से इलाज करायेंगें?

Your company name

fppt.com

True / False बताइए

- जो १० उपवास करे, वह गुरु है ।
- जो वस्त्र सहित हो, वह गुरु है ।
- जो गंडा - ताबीज देते है, वह गुरु है ।
- जो मात्र एक बार भोजन करते हैं, वह गुरु है ।
- जो २८ मूलगुण का सम्यक् पालन करते हैं, वह गुरु है ।
- जो मात्र नग्न रहते हैं, वह गुरु है ।
- जिनसे हम जैन शिक्षा ग्रहण करते हैं, वह गुरु है ।

fppt.com